INTERNATIONAL JOURNAL OF SCIENTIFIC INFORMATION
www.jsiinternational.com Research Article ISSN: 2583-8512

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में बंगाल की महिलाओं का योगदान: एक क्षेत्रीय अध्ययन

Saroj Bala, Jaswant Singh
Department of History, JWVU, Jaipur
Corresponding Author: Saroj Bala, skharb300@gmail.com

Article Received on: 03/04/25; Revised on: 12/04/25; Approved for publication: 18/04/25

प्रमुख शब्द

बंगाल की महिलाएं, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, नारी सशक्तिकरण, सामाजिक सुधार, महिला नेतृत्व, औपनिवेशिक शासन

How to Cite this Article:

Saroj Bala, Jaswant Singh. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में बंगाल की महिलाओं का योगदान: एक क्षेत्रीय अध्ययनInt. J. Sci. Info. 2025; 2(11):72-83

सारांश बंगाल की महिलाएं भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की एक अनदेखी किन्तु अत्यंत महत्वपूर्ण शक्ति थीं। उन्होंने सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक सीमाओं को पार करते हुए देश की आज़ादी के लिए सक्रिय भूमिका निभाई। उस दौर में महिलाओं की शिक्षा और सार्वजनिक भागीदारी पर प्रतिबंध थे, फिर भी बंगाल की महिलाओं ने सामाजिक रूढ़ियों का विरोध करते हुए शिक्षा के माध्यम से जागरूकता फैलाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। वे केवल पारंपरिक घरेलू भूमिकाओं तक सीमित नहीं रहीं, बल्कि क्रांतिकारी गतिविधियों, असहयोग और खिलाफत आंदोलनों में भी सक्रिय रूप से शामिल रहीं। इस प्रकार, उन्होंने औपनिवेशिक सत्ता के खिलाफ संघर्ष में अपनी निर्णायक भूमिका निभाई। इस अध्ययन में बंगाल की महिलाओं के साहस, नेतृत्व और बलिदान का विश्लेषण किया गया है, जिनमें बसंती देवी, सरला देवी चौधरानी, बेगम रुकैया जैसी प्रमुख हस्तियां शामिल हैं। इनके प्रयासों ने न केवल स्वतंत्रता संग्राम को मजबूत किया, बल्कि महिलाओं के सामाजिक अधिकारों और समानता के लिए भी स्थायी मार्ग प्रशस्त किया। साथ ही, यह शोध इस बात पर भी जोर देता है कि स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं के योगदान को अब तक सही स्थान नहीं मिला है। इसलिए, उनके योगदान को इतिहास की मुख्यधारा में शामिल करना और शैक्षणिक पाठ्यक्रमों में स्थान देना आवश्यक है। बंगाल की महिलाओं का संघर्ष न केवल राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिए प्रेरणा है, बल्कि यह आज के सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तनों में भी मार्गदर्शक सिद्ध होता है।

1. 1. परिचय

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में प्रायः पुरुष नेताओं की भूमिका को अधिक महत्व दिया गया है, किंतु यह कहना उचित नहीं होगा कि इस संघर्ष में महिलाओं की भागीदारी गौण थी। विशेष रूप से बंगाल की महिलाओं ने स्वतंत्रता आंदोलन में जो योगदान दिया, वह अद्वितीय और प्रेरणादायक है। उन्होंने न केवल राजनीतिक आंदोलनों में भाग लिया, बल्कि सामाजिक सुधार, शिक्षा, और सांस्कृतिक जागरूकता के माध्यम

से भी राष्ट्रनिर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका यह योगदान लंबे समय तक इतिहास के पन्नों में उपेक्षित रहा, जिसे उजागर करना आज की एक आवश्यक जिम्मेदारी बन गया है (सारकार, 1987)। बंगाल भारतीय नवजागरण का केंद्र था, जहाँ से महिलाओं की शिक्षा और सामाजिक सुधार की लहर उठी। राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, और रवींद्रनाथ ठाकुर जैसे समाज सुधारकों के प्रयासों ने बंगाल की महिलाओं में आत्मचेतना और शिक्षा के प्रति उत्साह जगाया। इस पृष्ठभूमि में महिलाओं ने स्वतंत्रता आंदोलन में भी अपनी सक्रिय भूमिका निभाई। स्वर्णकुमारी देवी, सरला देवी चौधुराणी और बेगम रुकैया सखावत हुसैन जैसी महिलाओं ने स्त्री शिक्षा, स्वावलंबन और राष्ट्रप्रेम को जोड़ते हुए सामाजिक परिवर्तन को दिशा दी (फोर्ब्स, 1999)। इनकी सक्रियता केवल सामाजिक दायरे तक सीमित नहीं रही, बल्कि उन्होंने राजनीतिक मंचों पर भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। स्वदेशी आंदोलन, असहयोग आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन जैसे अनेक आंदोलनों में बंगाल की महिलाओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। उन्होंने विदेशी वस्त्रों की होली जलाई, सत्याग्रह में हिस्सा लिया, ब्रिटिश अधिकारियों का विरोध किया और कई बार जेल की यातनाएँ भी सही। प्रीतिलता वादेदार और मातंगिनी हाजरा जैसी महिलाओं ने तो हथियार तक उठाए और अपनी जान की बाजी लगाकर देश की स्वतंत्रता के लिए लड़ाई लड़ी (बासु, 2002; रॉय, 2014)। उनका योगदान इस बात का प्रमाण है कि स्वतंत्रता संग्राम केवल पुरुषों का आंदोलन नहीं था, बल्कि उसमें महिलाओं की सक्रिय और निर्णायक भूमिका रही, जिसे आज के भारत को पहचानने और सराहने की आवश्यकता है।

1.1 महत्वपूर्ण योगदान

1.1.1. क्रांतिकारी गतिविधियों में भागीदारी

- **मातंगिनी हाजरा:**

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में बंगाल की महिलाओं की क्रांतिकारी भागीदारी अत्यंत साहसिक और प्रेरणादायक रही है। इस संदर्भ में मातंगिनी हाजरा का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। वे एक साधारण ग्रामीण महिला थीं, लेकिन उनमें असाधारण साहस और देशभक्ति की भावना थी। 'गांधी बुरी' के नाम से प्रसिद्ध मातंगिनी हाजरा ने 1942 के 'भारत छोड़ो आंदोलन' में मिदनापुर जिले के तामलुक क्षेत्र में अंग्रेजों के विरुद्ध जनआंदोलन का नेतृत्व किया। उस समय उनकी उम्र 70 वर्ष के पार थी, फिर भी उन्होंने निडरता से स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया। (विकिपीडिया, 2024)

29 सितंबर 1942 को, मातंगिनी हाजरा ने तिरंगा हाथ में लेकर एक शांतिपूर्ण जुलूस का नेतृत्व किया। जब अंग्रेज पुलिस ने प्रदर्शनकारियों को रोकने की कोशिश की, तो उन्होंने पीछे हटने के बजाय आगे बढ़ना जारी रखा। पुलिस द्वारा गोली चलाने पर भी वे नहीं रुकीं और गोली लगने के बावजूद उन्होंने तिरंगा झंडा गिरने नहीं दिया (सेन, 2019)। उनके अंतिम शब्द थे – "वंदे मातरम्"। उनकी शहादत ने बंगाल ही नहीं, बल्कि पूरे देश में लोगों को प्रेरित किया। उनकी मृत्यु के बाद तामलुक में तामलुक राष्ट्रीय सरकार की स्थापना हुई, जिसमें महिलाओं की भागीदारी और बढ़ी (सारकार, 1987)। मातंगिनी हाजरा का बलिदान इस बात का प्रतीक है कि स्वतंत्रता संग्राम केवल पुरुषों का नहीं था, बल्कि महिलाओं ने भी प्रत्यक्ष क्रांतिकारी गतिविधियों में हिस्सा लेकर इतिहास रचा। उनकी स्मृति में आज मिदनापुर और कोलकाता में उनकी प्रतिमाएं स्थापित की गई हैं। कोलकाता में विधान सभा भवन के पास उनकी मूर्ति आज भी उस साहसी महिला की याद दिलाती है, जिसने निडरता से राष्ट्र की सेवा की। उनकी कहानी भारतीय महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण और राष्ट्रभक्ति की मिसाल है, जिसे इतिहास में उचित स्थान दिया जाना चाहिए (फोर्ब्स, 1999; रॉय, 2014)।

- **प्रीतिलता वादेदार: एक साहसी क्रांतिकारी**

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में प्रीतिलता वादेदार का नाम एक साहसी और निडर महिला क्रांतिकारी के रूप में दर्ज है। वे बंगाल की उन पहली महिलाओं में से थीं जिन्होंने सीधे सशस्त्र क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लिया। उनका जन्म 1911 में चटगांव (अब बांग्लादेश) में हुआ था। पढ़ाई में कुशाग्र और देशभक्ति से ओतप्रोत प्रीतिलता ने शिक्षिका बनने के बाद भी क्रांतिकारी गतिविधियों से जुड़ाव बनाए रखा। वे प्रसिद्ध क्रांतिकारी सुर्य सेन (मास्टर दा) के नेतृत्व में कार्यरत रहीं और उनके संगठन से जुड़कर ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध कई अभियानों में भाग लिया (विकिपीडिया, 2024)। 1932 में, ब्रिटिशों द्वारा पहारतली यूरोपीय क्लब में लगाए गए बोर्ड पर लिखा था — "Dogs and Indians not allowed" (कुत्तों और भारतीयों को अनुमति नहीं)। यह अपमानजनक बोर्ड भारतीयों के आत्मसम्मान पर आघात करता था। इस अपमान का बदला लेने और ब्रिटिश सत्ता के खिलाफ साहसी संदेश देने के लिए प्रीतिलता ने उस क्लब पर हमला करने की योजना बनाई। 23 सितंबर 1932 को, उन्होंने पुरुष क्रांतिकारियों के साथ मिलकर क्लब पर बम से हमला किया, जिसमें कई अंग्रेज घायल हुए। इस साहसी अभियान के बाद जब गिरफ्तारी का खतरा सामने आया, तो उन्होंने पकड़े जाने के बजाय अपने साथ लाया गया सायनाइड खाकर आत्महत्या कर ली। वे मात्र 21 वर्ष की आयु में शहीद हो गईं। (बैनर्जी, 2005)

प्रीतिलता का बलिदान उस युग की महिलाओं की राजनीतिक चेतना और क्रांतिकारी निष्ठा का प्रतीक है। उन्होंने दिखा दिया कि देशभक्ति के लिए लिंग कोई बाधा नहीं है (कुमारी, 2022)। उनकी शहादत ने न केवल बंगाल की, बल्कि पूरे भारत की युवतियों को प्रेरित किया। आज भी उनकी स्मृति में बंगाल और बांग्लादेश में कई संस्थान और सड़कों के नाम प्रीतिलता के नाम पर रखे गए हैं। उनकी जीवनगाथा भारतीय नारी शक्ति की साहसिकता और आत्मबलिदान की एक अमर कथा है। (फोर्ब्स, 1999; देबनाथ, 2017)

2. शिक्षा और सामाजिक सुधार में योगदान

2.1 महिला शिक्षा की नींव रखने वाली बेगम रुकैया सखावत हुसैन

बेगम रुकैया सखावत हुसैन (1880–1932) बंगाल की एक प्रमुख समाज सुधारक, शिक्षाविद और लेखिका थीं, जिन्होंने विशेष रूप से मुस्लिम महिलाओं के लिए शिक्षा को एक सामाजिक आंदोलन का रूप दिया। उन्होंने 1911 में कोलकाता में *सखावत मेमोरियल गर्ल्स स्कूल* की स्थापना की, जो विशेषकर मुस्लिम लड़कियों को शिक्षित करने के उद्देश्य से खोला गया था (रॉय, 2018)। उस समय मुस्लिम समाज में महिलाओं की शिक्षा को लेकर गहरी रूढ़ियाँ थीं, जिनका उन्होंने साहसपूर्वक विरोध किया और लड़कियों के लिए आधुनिक शिक्षा की व्यवस्था की। उनके पति सैयद सखावत हुसैन की मृत्यु के बाद भी उन्होंने इस स्कूल को चलाना जारी रखा और इसे महिलाओं के उत्थान का माध्यम बनाया। (फेमिनिज़्म इन इंडिया, 2020**)** रुकैया की साहित्यिक रचनाएँ भी उनके विचारों की गहराई को दर्शाती हैं। उनकी प्रसिद्ध कहानी *सुल्ताना का सपना* (1905) एक काल्पनिक दुनिया की झलक देती है, जहाँ महिलाएँ शासन करती हैं और पुरुष पर्दे में रहते हैं। इस रचना में उन्होंने विज्ञान, समानता और महिला सशक्तिकरण की कल्पना की थी — यह नारीवादी साहित्य का एक आरंभिक उदाहरण माना जाता है। यह कहानी यह भी दर्शाती है कि शिक्षा और जागरूकता महिलाओं को किस तरह एक स्वतंत्र समाज का हिस्सा बना सकती हैं। (बीबीसी हिंदी, 2017) रुकैया ने केवल विद्यालय की स्थापना ही नहीं की, बल्कि 1916 में *अंजुमन-ए-खवातीन-ए-इस्लाम* नामक संगठन की भी नींव रखी, जो मुस्लिम महिलाओं के बीच शिक्षा, आत्मनिर्भरता और सामाजिक भागीदारी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कार्यरत था। वे इस बात की पक्षधर थीं कि धार्मिक सीमाओं के भीतर रहते हुए भी महिलाएं शिक्षित और स्वावलंबी बन सकती हैं। उनका मानना था कि जब तक महिलाएं शिक्षित नहीं होंगी, तब तक समाज प्रगति नहीं कर सकता। (द प्रिंट हिंदी,2021) आज भी कोलकाता का *सखावत मेमोरियल गर्ल्स स्कूल* महिला शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत है और बेगम रुकैया की विरासत को जीवित रखे हुए है (गुप्ता, 2016)। उनका जीवन इस

बात का उदाहरण है कि शिक्षा के माध्यम से महिलाएं समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकती हैं। उन्होंने ना केवल एक संस्था की नींव रखी, बल्कि विचारधारा और चेतना का वह बीज बोया, जो आज भी फल-फूल रहा है। (टेलीग्राफ इंडिया,2024)

2.2 स्वर्णकुमारी देवी

स्वर्णकुमारी देवी (1855–1932) भारतीय समाज की एक प्रमुख लेखिका, कवयित्री और सामाजिक सुधारक थीं, जिन्होंने विशेष रूप से महिलाओं के लिए शिक्षा और जागरूकता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। वे रवींद्रनाथ ठाकुर (रवींद्रनाथ टैगोर) की बड़ी बहन थीं और बंगाल में महिलाओं के उत्थान के लिए कार्यरत रहीं। स्वर्णकुमारी ने 1884 में 'भारती' नामक साहित्यिक पत्रिका का संपादन किया, जिससे वे भारत की पहली महिला संपादिका बनीं। उनके संपादन में पत्रिका ने महिलाओं के लिए विज्ञान, समाज सुधार और साहित्यिक जागरूकता के मुद्दों को प्रमुखता से उठाया। स्वर्णकुमारी ने पत्रिका के माध्यम से महिलाओं को वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तार्किक सोच से परिचित कराया, जिससे समाज में महिलाओं की स्थिति में सुधार की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम बढ़ाया गया। स्वर्णकुमारी देवी ने साहित्य के विभिन्न क्षेत्रों में योगदान दिया। उनका पहला उपन्यास 'दीपनिर्वाह' 1876 में प्रकाशित हुआ, जो राष्ट्रवादी चेतना का प्रतीक माना जाता है। इसके बाद उन्होंने कई उपन्यास, कविता, नाटक और वैज्ञानिक निबंध लिखे। 1879 में उन्होंने बंगाली में पहला ओपेरा 'बसंत उत्सव' की रचना की। (मिश्रा, 2021) उनके लेखन में महिलाओं की सामाजिक स्थिति, पितृसत्ता के खिलाफ संघर्ष और वैज्ञानिक सोच को प्रमुखता से स्थान मिला। स्वर्णकुमारी देवी ने सामाजिक सुधार के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण कार्य किए। वे 1882 से 1886 तक 'थियोसोफिकल सोसायटी' की महिला अध्यक्ष रहीं और 'विधवा शिल्पा आश्रम' की भी अध्यक्ष बनीं, जो विधवा महिलाओं के हितों के संरक्षण के लिए काम करता था। इसके अलावा, उन्होंने 1896 में 'सखी समिति' की स्थापना की, जिसका उद्देश्य बंगाल में अनाथों और विधवाओं के हितों के लिए काम करना था। इन संस्थाओं के माध्यम से उन्होंने महिलाओं को शिक्षित करने और समाज में उनकी स्थिति सुधारने के लिए कार्य किया। स्वर्णकुमारी देवी का योगदान आज भी महिलाओं के सशक्तिकरण और समाज सुधार के क्षेत्र में प्रेरणादायक है। उनकी पत्रिका 'भारती' ने महिलाओं के लिए एक मंच प्रदान किया, जहाँ वे अपने विचारों को व्यक्त कर सकती थीं। उनके कार्यों ने भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति में सुधार की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वर्णकुमारी देवी का जीवन और कार्य यह दर्शाता है कि शिक्षा और जागरूकता के माध्यम से समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है। (दत्त, 2017)

3. राजनीतिक भागीदारी और नेतृत्व

3.1 बसंती देवी: स्वतंत्रता संग्राम की गुमनाम नायिका

बसंती देवी (1880–1974) ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन (1920) में भाग लिया और असहयोग आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई। उन्होंने विदेशी कपड़ों के बहिष्कार और स्वदेशी वस्त्रों के प्रचार में भी भाग लिया। इसके साथ ही, उन्होंने 'नारी कर्मा मंदिर' की स्थापना की, जो महिला कार्यकर्ताओं के लिए प्रशिक्षण केंद्र था। उनकी सक्रियता के कारण उन्हें गिरफ्तार भी किया गया, लेकिन उन्होंने कभी भी अपने संघर्ष को कम नहीं होने दिया। उनकी कड़ी मेहनत और समर्पण ने उन्हें स्वतंत्रता संग्राम की गुमनाम नायिका बना दिया। (चौधरी, 2019)

3.2 सरला देवी चौधरानी: ओडिशा की पहली महिला विधायक

सरला देवी चौधरानी (1904–1986) ओडिशा की पहली महिला विधायक थीं। उन्होंने 1936 में ओडिशा विधानसभा में सदस्य के रूप में शपथ ली और 1946 में उड़ीसा विश्वविद्यालय की पहली महिला सदस्य बनीं। उनकी सक्रियता ने ओडिशा में महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए। उन्होंने महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू और सरोजिनी नायडू जैसे नेताओं के साथ मिलकर स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया और महिलाओं की स्थिति सुधारने के लिए कार्य किया।

3.3 महात्मा गांधी से संबंध और सामाजिक कार्य

सरला देवी चौधरानी का महात्मा गांधी से गहरा संबंध था। गांधी जी ने उन्हें अपनी आध्यात्मिक पत्नी माना और उनके विचारों को साझा किया। उन्होंने महिलाओं के लिए शिक्षा, स्वदेशी वस्त्रों का प्रचार और सामाजिक सुधार के लिए कार्य किया। उनकी लेखनी में महिलाओं की समस्याओं और उनके अधिकारों की बात की गई है, जो आज भी प्रासंगिक हैं। (शर्मा, 2020)

3.4 नारी सशक्तिकरण की दिशा में योगदान

बसंती देवी और सरला देवी चौधरानी दोनों ने नारी सशक्तिकरण की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किए। बसंती देवी ने महिलाओं के लिए शिक्षा और जागरूकता के माध्यम से समाज में बदलाव लाने की कोशिश की,

जबकि सरला देवी चौधरानी ने राजनीति और समाज सुधार के क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए कार्य किया। इन दोनों ने अपने संघर्षों और कार्यों से यह सिद्ध किया कि महिलाएं किसी भी क्षेत्र में पुरुषों से कम नहीं हैं। (मित्तल, 2015)

बसंती देवी और सरला देवी चौधरानी की जीवन गाथाएँ हमें यह सिखाती हैं कि महिलाओं ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनके संघर्ष और समर्पण ने न केवल स्वतंत्रता की प्राप्ति में योगदान दिया, बल्कि समाज में महिलाओं की स्थिति सुधारने के लिए भी मार्ग प्रशस्त किया। इनकी प्रेरणा से हम आज भी नारी सशक्तिकरण की दिशा में कार्य कर सकते हैं। (सिंह, 2018)

4. चर्चा

बंगाल की महिलाओं ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अपनी भूमिका निभाने के लिए अनेक सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक बाधाओं को तोड़ा। उस समय का समाज महिलाओं को मुख्य रूप से घर के भीतर सीमित करता था, जहाँ उनकी शिक्षा, स्वायत्तता और सार्वजनिक जीवन में भागीदारी पर कई तरह की पाबंदियाँ थीं। इसके बावजूद, बंगाल की महिलाएं इन रूढ़िवादों को चुनौती देते हुए स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से शामिल हुईं। उन्होंने परंपरागत सीमाओं को तोड़ते हुए न केवल अपने परिवार और सामाजिक परिवेश से विद्रोह किया, बल्कि औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध सशक्त संघर्ष भी किया। महिलाओं की भागीदारी सिर्फ विरोध प्रदर्शन तक सीमित नहीं थी, बल्कि उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम के हर पहलू में योगदान दिया। उदाहरण के लिए, क्रांतिकारी गतिविधियों में महिलाएं गोपनीय रूप से संदेश पहुँचाने, हथियार छुपाने और विद्रोही नेताओं का समर्थन करने जैसे जोखिम भरे कार्यों में लगी रहीं। यह उनके साहस और समर्पण का परिचायक था कि वे पुरुष नेताओं की तरह ही कठोर परिस्थितियों का सामना करने को तैयार थीं। बसंती देवी, सरला देवी चौधरानी, बेगम रुकैया जैसी महिलाओं ने न केवल नेतृत्व किया बल्कि लाखों अन्य सामान्य महिलाओं को भी जागरूक और सशक्त बनाया। शिक्षा को महिलाओं के सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण माध्यम माना गया। बंगाल में कई महिलाओं ने अपने जीवन को शिक्षा और जागरूकता के लिए समर्पित किया। उन्होंने लड़कियों के लिए स्कूल खोले और सामाजिक रूढ़ियों के खिलाफ आवाज़ उठाई। इसके जरिए वे केवल व्यक्तिगत विकास नहीं कर रही थीं, बल्कि सामाजिक सुधार के लिए भी मजबूत आधार तैयार कर रही थीं। इस तरह, शिक्षा न केवल महिलाओं को स्वावलंबी बना रही थी, बल्कि यह समाज में समग्र परिवर्तन की दिशा में भी एक प्रभावी उपकरण साबित हो रही थी। इसके अलावा, बंगाल की महिलाओं ने असहयोग

आंदोलन, खिलाफत आंदोलन और सविनय अवज्ञा आंदोलनों जैसे विभिन्न राजनीतिक आंदोलनों में भी सक्रिय भागीदारी निभाई। उन्होंने सार्वजनिक सभाओं में हिस्सा लिया, विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार किया और स्वदेशी उद्योगों का समर्थन किया। इस तरह के राजनीतिक कार्यों ने महिलाओं को राजनीतिक जागरूकता दी और उनके नेतृत्व कौशल को निखारा। बंगाल की महिला नेता न केवल क्षेत्रीय बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर भी सम्मानित और प्रभावशाली बनीं। महिलाओं की इस सक्रिय भागीदारी ने सामाजिक ढांचे में भी गहरा प्रभाव डाला। उन्होंने पितृसत्ता के खिलाफ आवाज़ उठाई, बाल विवाह, दहेज प्रथा और विधवा पुनर्विवाह जैसे सामाजिक कुरीतियों का विरोध किया। साथ ही, वे महिलाओं के समान अधिकारों और स्वतंत्रता की मांग करने लगीं। इस प्रक्रिया में महिलाओं ने न केवल स्वतंत्रता संग्राम को मजबूत किया, बल्कि भारतीय समाज के उदार और प्रगतिशील स्वरूप को भी आकार दिया। इस प्रकार, बंगाल की महिलाओं ने स्वतंत्रता संग्राम में न केवल एक भागीदार के रूप में बल्कि एक सक्रिय क्रांतिकारी, शिक्षिका, और समाज सुधारक के रूप में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके प्रयासों ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को और अधिक समावेशी और सशक्त बनाया। आज भी उनकी प्रेरणा हमें यह याद दिलाती है कि सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन में महिलाओं की भागीदारी अनिवार्य है और यह देश के संपूर्ण विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है।

तालिक 1: भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में बंगाल की महिलाओं का योगदान

विषय	**महिला व्यक्तित्व / उदाहरण**	**प्रमुख योगदान**	**स्रोत / उल्लेख**
क्रांतिकारी गतिविधियां	मातंगिनी हाजरा	भारत छोड़ो आंदोलन का नेतृत्व, ब्रिटिश पुलिस के सामने बहादुरी, तिरंगा झंडा थामे रहना	विकिपीडिया (2024), सेन (2019)
	प्रीतिलता वादेदार	सशस्त्र क्रांति, ब्रिटिश क्लब पर बम हमला, आत्महत्या कर शहीद	बैनर्जी (2005), कुमारी (2022)
शिक्षा और सामाजिक सुधार	बेगम रुकैया सखावत हुसैन	मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा हेतु स्कूल की स्थापना, सामाजिक जागरूकता, नारी शिक्षा का प्रचार	द प्रिंट हिंदी (2021), टेलीग्राफ (2024)

	स्वर्णकुमारी देवी	महिला शिक्षा, साहित्य, सामाजिक सुधार, 'भारती' पत्रिका संपादन, विधवा महिलाओं के लिए काम	दत्त (2017), मिश्रा (2021)
राजनीतिक भागीदारी और नेतृत्व	बसंती देवी	असहयोग आंदोलन में सक्रिय, विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार, 'नारी कर्मा मंदिर' की स्थापना	फेमिनिज़्म इन इंडिया (2022)
	सरला देवी चौधरानी	ओडिशा की पहली महिला विधायक, स्वतंत्रता संग्राम में भाग, गांधीजी के साथ संबंध, महिला सशक्तिकरण	शर्मा (2020), मित्तल (2015)
सामाजिक सुधार और नारी सशक्तिकरण	बसंती देवी एवं सरला देवी चौधरानी	महिलाओं के अधिकारों के लिए संघर्ष, सामाजिक सुधार, शिक्षा और राजनीतिक क्षेत्र में सक्रिय भूमिका	सिंह (2018), गुप्ता (2016)
सामान्य भूमिका और प्रभाव	सभी उपरोक्त महिलाएं	सामाजिक रूढ़ियों को तोड़ना, स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भागीदारी, महिलाओं के अधिकारों की लड़ाई	सारकार (1987), रॉय (2014)

7. निष्कर्ष

बंगाल की महिलाएं भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की एक अनदेखी किंतु अत्यंत महत्वपूर्ण शक्ति थीं, जिन्होंने अपने साहस, धैर्य और समर्पण से न केवल देश की स्वतंत्रता में योगदान दिया बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों के भी अग्रदूत बनीं। उनके नेतृत्व और बलिदान ने महिलाओं के लिए नए रास्ते खोले और आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा दी कि वे भी सामाजिक अन्याय और राजनीतिक उत्पीड़न के खिलाफ आवाज़ उठाएं। स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भागीदारी को अक्सर इतिहास की मुख्यधारा में कमतर आंका गया है, जबकि उनका योगदान समग्र आंदोलन की सफलता के लिए अनिवार्य था। आज के युवा वर्ग के लिए बंगाल की महिलाओं का संघर्ष प्रेरणा स्रोत है, जो यह सिखाता है कि परिवर्तन केवल पुरुषों के प्रयासों से संभव नहीं होता, बल्कि महिलाओं के साहस, बुद्धिमत्ता और समर्पण के बिना कोई भी आंदोलन सफल नहीं हो सकता। उनके द्वारा स्थापित आदर्श न केवल स्वतंत्रता के संघर्ष तक सीमित थे, बल्कि वे सामाजिक समानता, शिक्षा और महिला सशक्तिकरण की दिशा में भी महत्वपूर्ण संदेश देते हैं। इसलिए, आवश्यक है

कि हम उनके योगदान को सही स्थान दें और इसे शैक्षणिक विमर्श, इतिहास की पुस्तकों, और सामाजिक अध्ययन के पाठ्यक्रमों में शामिल करें। इससे न केवल महिलाओं की भूमिका का उचित सम्मान होगा, बल्कि आने वाली पीढ़ियां भी इस इतिहास से प्रेरित होकर समाज में सकारात्मक बदलाव ला सकेंगी। बंगाल की महिलाओं का संघर्ष हमें याद दिलाता है कि समानता, स्वतंत्रता और न्याय के लिए प्रयास करना निरंतर जारी रहना चाहिए, क्योंकि ये मूलभूत मूल्य किसी भी समाज की प्रगति के लिए आवश्यक हैं।

संदर्भ

- कुमारी, आर. (2022). भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिला नेतृत्व. पटना: बिहार शिक्षा प्रेस।
- गुप्ता, एस. (2016). महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी और स्वतंत्रता संग्राम. महिला अध्ययन, 5(4), 33-50।
- चौधरी, एस. (2019). बंगाल की महिला क्रांतिकारिणी: सामाजिक और राजनीतिक प्रभाव. सामाजिक विज्ञान अनुसंधान, 7(1), 12-28।
- टेलीग्राफ इंडिया. (9 दिसम्बर, 2024). *Begum Rokeya remembered for pioneering girls' education.* https://www.telegraphindia.com/my-kolkata/news/begum-rokeya-remembered-for-pioneering-girls-education/cid/1983076
- द प्रिंट हिंदी. (9 दिसम्बर, 2021). *बेग़म रुकैया सख़ावत हुसैन: जब महिलाओं के लिए स्कूल खोलना भी क्रांति थी.* https://hindi.theprint.in/history/begum-rokeya-remembering-muslim-woman-who-started-school-in-1905/798362/
- दत्त, वी. (2017). बंगाल की महिला नेताओं का इतिहास. कोलकाता: पश्चिम बंगाल पब्लिशिंग हाउस।
- देबनाथ, बी.। *प्रीतिलता: एक विस्मृत नायिका*। नेशनल बुक ट्रस्ट, भारत, 2017।
- फेमिनिज़्म इन इंडिया. (2022, 16 नवम्बर). *बसंती देवी: स्वतंत्रता संग्राम की गुमनाम नायिका.* https://hindi.feminisminindia.com/2022/11/16/basanti-devi-freedom-fighter-profile-in-hindi/
- फेमिनिज़्म इन इंडिया. (2022, 31 अगस्त). स्वर्णकुमारी देवी: बंगाली कवयित्री, उपन्यासकार और सामाजिक कार्यकर्ता। https://hindi.feminisminindia.com/2022/08/31/bengali-writer-swarnakumari-devi-profile-hindi/

- फेमिनिज़्म इन इंडिया. (6 नवम्बर, 2020). *बेगम रुकैया: मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा की पथप्रदर्शक.* https://hindi.feminisminindia.com/2020/11/06/begum-rokeya-profile-hindi/
- फोर्ब्स, गेराल्डिन। *आधुनिक भारत में महिलाएँ*. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1999।
- बासु, अमृता। *भारतीय महिलाओं का आंदोलन: एक वैश्विक परिप्रेक्ष्य*. काली फॉर वुमन, 2002।
- बीबीसी हिंदी. (8 मई, 2017). *जब महिलाएं हुकूमत करती थीं और मर्द पर्दे में रहते थे.* https://www.bbc.com/hindi/india-39830651
- बैनर्जी, हेमचंद्र। *चटगांव विद्रोह और क्रांतिकारी आंदोलन*। कोलकाता विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2005।
- मित्तल, के. (2015). स्वाधीनता आंदोलन में नारी सशक्तिकरण. लखनऊ: हिंदी पुस्तक भवन।
- मिश्रा, आर. (2021). भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं का योगदान: क्षेत्रीय दृष्टिकोण. समकालीन इतिहास पत्रिका, 10(3), 78-95।
- रॉय, कौशिकी। *भारतीय इतिहास में महिलाएँ: सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक आयाम*. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2014।
- रॉय, बी. (2018). बंगाल की महिलाओं की सामाजिक चेतना और स्वतंत्रता संग्राम. हिंदी सामाजिक अध्ययन, 3(2), 99-115।
- विकिपीडिया. (2024). *सरला देवी चौधरानी*. https://en.wikipedia.org/wiki/Sarala_Devi
- विकिपीडिया। (2024)। *प्रीतिलता वादेदार*। https://hi.wikipedia.org/wiki/प्रीतिलता_वादेदार
- विकिपीडिया। (2024)। *मातंगिनी हाजरा*। https://hi.wikipedia.org/wiki/मातंगिनी_हाजरा
- शर्मा, पी. (2020). बंगाल की महिलाओं का स्वतंत्रता संग्राम में योगदान: एक अध्ययन. भारतीय इतिहास जर्नल, 15(2), 45-62।
- सारकार, सुमित। *आधुनिक भारत 1885-1947*. मैकमिलन, 1987।
- सिंह, आर. (2018). भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका. नई दिल्ली: राष्ट्रीय प्रकाशन।
- सेन, डी. (2019). बंगाल के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका: ऐतिहासिक विवेचना. भारतीय इतिहास समीक्षा, 12(1), 55-70।

Source of support: Nil, Conflict of interest: None Declared